BSKC -132

B.A. in Applied Sanskrit/अनुप्रयुक्त संस्कृत में स्नातक उपाधि कार्यक्रम

(BAASK)

सत्रीय कार्य

(जनवरी **2024 एवं जुलाई 2024** सत्र के लिये)

BSKC -132 संस्कृत गद्य साहित्य

मानविकी विद्यापीठ

इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय

मैदान गढ़ी, नई दिल्ली- 110068

सत्रीय कार्य (2024-25)

पाठ्यक्रम शीर्षक- संस्कृत पद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : BSKC-132 /2024-25

प्रिय छात्र/छात्राओं,

यह सत्रीय कार्य शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य (TMA) है । सत्रीय कार्य के लिए 100 अंक निर्धारित किए गए हैं । सत्रीय कार्य में पूरे पाठ्यक्रम से प्रश्न पूछे जायेंगे ।

उद्देश्य : शिक्षक जाँच सत्रीय कार्य का उद्देश्य यह जाँचना है कि आपने पाठ्य सामग्री को कितना समझा है और आप उसे अपने शब्दों में कैसे प्रस्तुत कर सकते हैं । यहाँ पाठ्य सामग्री की पुनर्प्रस्तुति से तात्पर्य नहीं है वरन् अध्ययन के दौरान जो कुछ सीखा और समझा है उसे आप आलोचनात्मक ढंग से प्रस्तुत कर सकें ।

निर्देश : सत्रीय कार्य आरम्भ करने से पूर्व निम्नलिखित बातों को ध्यान से पढ़िये :

1.) अपनी उत्तर पुस्तिकाओं के पहले पृष्ठ के दाएँ सिरे पर अनुक्रमांक, नाम, पूरा पता और दिनाँक लिखिए ।

2.) बाईं ओर पाठ्यक्रम का शीर्षक, सत्रीय कार्य संख्या और अपने अध्ययन केन्द्र का उल्लेख करें जैसा आगे दिखाया गया है:

अनुक्रमांक : .....

नाम : .....

पता : .....

पाठ्यक्रम का नाम/कोड : .....

सत्रीय कार्य कोड : .....

अध्ययन केन्द्र का नाम/कोड : .....

दिनाँक : .....

सत्रीय कार्य के लिए आवश्यक निर्देश

1. अध्ययन: सबसे पहले सत्रीय कार्य को ध्यान से पढ़िए । फिर इससे संबंधित इकाईयों का सावधानीपूर्वक अध्ययन कीजिए । अंत में प्रत्येक प्रश्न के संबंध में कुछ विशेष बातें नोट कर लीजिए और उन्हें तार्किक ढ़ग से व्यवस्थित कीजिए ।

2. अभ्यास: उत्तर का प्रारूप तैयार करने से पूर्व नोट की गई बातों पर विचार कीजिए । अनावश्यक बातों को हटा दीजिए और प्रत्येक बिन्दु पर विस्तार से विचार कीजिए । निबन्धात्मक या टिप्पणीपरक प्रश्नों में आरम्भ और उपसंहार पर विशेष ध्यान दीजिए । उत्तर के आरम्भिक अंश में प्रश्न की संक्षिप्त व्याख्या और अपने उत्तर की दिशा का संकेत अवश्य दे देना चाहिए । मध्य भाग में आप उत्तर का मुख्य भाग आवश्यक विस्तार के साथ क्रमबद्धता और तार्किक ढ़ग से प्रस्तुत करें । उपसंहार में उत्तर का सार देना चाहिए ।

यह सुनिश्चित कर लीजिए कि :

क) आपका उत्तर तार्किक और सुसंगत हो,

ख) उत्तर सही ढ़ग से लिखा गया हो तथा आपकी अभिव्यक्ति शैली और प्रस्तुति के पूर्णतया अनुकूल हो,

ग) आपके लेखन में भाषागत त्रुटियों न हों, विशेष रूप से मात्रा और व्याकरण संबंधी गलतियों से बचें ।

3. प्रस्तुति: जब आप अपने उत्तर से पूर्णतया संतुष्ट हो जाएँ, तो उसे साफ़ और सुंदर अक्षरों में उत्तर पुस्तिका में लिख लीजिए तथा जिन बातों पर आप जोर देना चाहते हैं, उन्हें रेखांकित कर दीजिए ।

शुभकामनाओं के साथ ।

नोट: याद रखें कि परीक्षा में बैठने से पूर्व सत्रीय कार्य जमा कराना अनिवार्य है, अन्यथा आपको परीक्षा में बैठने की अनुमति नहीं दी जाएगी ।

सत्रीय कार्य जमा कराने की तिथियाँ:

जनवरी, 2024 सत्र के लिए : 30 सितम्बर, 2024

जुलाई, 2024 सत्र के लिए : 31 मार्च, 2025

सत्रीय कार्य

BSKC -132 संस्कृत गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम कोड : BSKC -132 सत्रीय कार्य : BSKC -132/TMA/2023-24

पूर्णांक : 100

नोट – सभी प्रश्न अनिवार्य हैं : -

खण्ड-क

(व्याख्यात्मक प्रश्न)

1. अधोलिखित गद्यांशों की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए: 20×2=40

(क) यथा यथा चेयं चपला दीप्यते तथा तथा दीपशिखेव कज्जलमलिनमेव कर्म केवलमुद्वमति । तथाहि । इयं संवर्धनवारिधारा तृष्णाविषवल्लीनाम् व्याघगीतिरिन्द्रियमृगाणाम् परामर्शधूमलेखा सच्चरितचित्राणाम्. विभ्रमशय्या मोहदीर्घनिद्राणाम्, निवासजीर्णवलभी धनमदपिशाचिकानाम्, तिमिरोद्गतिः शास्त्रदृष्टीनाम्, पुरःपताका सर्वाविनयानाम्, उत्पत्तिनिम्नगा क्रोधावेगग्राहाणाम् आपानभूमिर्विषयमधूनाम्, सङ्गीतशाला भ्रूविकारनाट्यानाम्, आवासदरी दोषाशी विषाणाम्, उत्सारणवेत्रलता सत्पुरुषव्यवहाराणाम्, अकालप्रावृड् गुणकलहंसकानाम्, विसर्पणभूमिल कापवादविस्फोटकानाम्, प्रस्तावना कपटनाटकस्य, कदलिका कामकारिणः, वध्यशाला साधुभावस्य, राहुजिह्वा धर्मेन्दुमण्डलस्य ।

अथवा

भगवान् बद्धसिद्धासनैर्निरुद्ध-निःश्वासैः प्रबोधितकुण्डलिनीकैर्विजितदशेन्द्रियैरनाहत-नादतन्तु- मवलम्ब्याऽऽज्ञाचक्रं संस्पृश्य, चन्द्रमण्डलं भित्त्वा, तेजः पुञ्जमविगणय्य, सहस्रदलकमलस्यान्तः प्रविश्य, परमात्मानं साक्षात्कृत्य, तत्रैव रममाणैर्मृत्युञ्ज-यैरानन्दमात्रस्वरूपैर्ध्यानावस्थितैर्भवाद्दशैर्न ज्ञायते कालवेगः ।

(ख) ग्रहैरिव गृह्यन्ते, भूतैरिवाभिभूयन्ते, मन्त्रैरिवावेश्यन्ते, सत्त्वैरिवावष्टभ्यन्ते, वायुनेव शुकनास विडम्ब्यन्ते, पिशाचैरिव ग्रस्यन्ते, मदनशरैर्मर्माहता इव मुखभङ्गसहस्राणि कुर्वते, धनोष्मणा पच्यमाना इव विचेष्टन्ते, गाढप्रहाराहता इव अङ्गानि न धारयन्ति, कुलीरा इव तिर्यक् परिभ्रमन्ति, अधर्मभग्नगतयः पङ्गव इव परेण संचार्यन्ते । मृषावादविषविपाकसंजातमुखरोगा इवातिकृच्छ्रेण जल्पन्ति, सप्तच्छदतरव इव कुसुमरजोविकारैः आसन्नवर्तिनां शिरः शूलमुत्पादयन्ति, आसन्नमृत्यव इव बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति, उत्कुपितलोचना इव तेजस्विनो नेक्षन्ते, कालदंष्टा इव महामन्त्रैरपि न प्रतिबुध्यन्ते ।

अथवा

मिथ्यामाहात्म्य गर्व निर्भराश्च न प्रणमन्ति देवताभ्यः न पूजयन्ति द्विजातीन् न मानयन्ति मान्यान्, नार्चयन्त्यर्चनीयान्, नाभिवादयन्त्यभिवादनार्हान्, नाभ्युतिष्ठन्ति गुरून्, अनर्थकायासान्तरितविषयोपभोग सुखमित्युपहसन्ति विद्वज्जनम्, जरावैक्लव्यप्रलपितमिति पश्यन्ति वृद्धजनोपदेशम् आत्मप्रज्ञापरिभव इत्यसूयन्ति सचिवोपदेशाय कुप्यन्ति हितवादिने ।

खण्ड-ख

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

नोट : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 700 शब्दों (प्रत्येक) में लिखिए। 15×2 = 30

2. रामशरण त्रिपाठी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'गद्यं कवीना निकषं वदन्ति। ' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. 'शुकनासोपदेश' के आधार पर 'लक्ष्मी के स्वरूप' को अपने शब्दों में निबद्ध कीजिए।

अथवा

'शिवराजविजय में वर्णित 'गौरबटु' (गौरसिंह) के व्यक्तित्व को अपने शब्दों में प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड-ग

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

नोट: निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर (प्रत्येक) लगभग 250 शब्दों में दीजिए। 6×5 =30

4. संस्कृत गद्यकाव्य के विकास पर लेख लिखिए।
5. पण्डिता क्षमाराव की रचनाओं का वर्णन कीजिए।
6. 'शुकनासोपदेश' के अनुसार युवावस्था के दोषों का निरूपण कीजिए।
7. 'शिवराजविजय' में वर्णित 'बालिका' के स्वरूप को अपने शब्दों में व्यक्त कीजिए।
8. महाकवि भारवि की भाषाशैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
9. नीति तथा लोककथाओं के उद्भव और विकास पर लेख लिखिए।
10. 'विश्वेश्वर पाण्डेय' के कृतित्व और व्यक्तित्व पर प्रकाश डालिए।